MIC- II

संस्कृत काव्य

3 Credits

100 Marks-70+30

उद्देश्य

व्यक्तित्व के विकास के लिए काव्य-साहित्य का सेवन नितांत आवश्यक है। शास्त्रों में वर्णित है–

संसारविषवृक्षस्य द्वे एव मधुरे फले।
काव्यामृत रसास्वादः संगमः सज्जनैः सह।।

छात्र छात्राओं के जीवन में काव्य रूपी अमृत का सेवन उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को परिपक्व व सुदृढ़ बनाने मे सहायक है। काव्यों की सूक्तियाँ, रसानुभूति, सौन्दर्यबोध मानव–जीवन को आनन्दित एवं आन्दोलित करने तथा जीवन जीने की कला सिखाने में समर्थ है।साधु–काव्य के सेवन से "सत्यं शिवं एवं सुन्दरम्" का समवेत बोध छात्र/छात्राओं को हो सके–एतदर्थ काव्य का अध्ययन/अध्यापन अपेक्षित है।

Unit	Prescribed Course	No. of lectures
I	भगवद्गीता द्वितीय अध्याय (स्थित प्रज्ञ विवेचन)–श्लोक संख्या–54 से 72 तक	09
II	पूर्वमेघदूतम्–श्लोक संख्या–01 से 20 तक	08
III	नीतिशतकम्–श्लोक संख्या–01 से 20 तक	08
IV	Tutorial	05
	Total	30

Reading List

1. श्रीमद्भगवद्गीता व्याख्याकार–मदनमोहन अगवाल, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान वाराणसी, 1994
2. मेघदूतम, मोतीलाल बुक्स पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स अशोक राजपथ पटना|
3. जनार्दन शास्त्री, भारविकृत किरातार्जनीयम्, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. श्रीमद्भगद्गीता–एस० राधाकृष्णन कृत व्याख्या का हिन्दी अनुवाद, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली–, 1969
5. बाबूराम त्रिपाठी(सम्पा.), भर्तृहरि कृत नीतिशतकम् महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा, 1986
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।

अधिगम उपलब्धिः–

- छात्र संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- वह संस्कृत साहित्य पद्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्यबोध कर सकेंगे।
- उनमें काव्य में प्रयुक्त रस, छंद, अलंकारों को समझने की क्षमता विकसित होगी।
- पद्य में निहित सूक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होगा।
- छात्रों के शब्दकोश में वृद्धि होने के साथ–साथ वह संस्कृत श्लोकों के शुद्ध और सस्वर उच्चारण के कौशल में निपुण बनेंगे

14/06/2023

14/6/23

MIC- I:संस्कृत व्याकरण

3 Credits

100 Marks-70+30

उद्देश्य

"मुखं व्याकरणं स्मृतम्"–संस्कृत भाषा की अवगति(समझदारी) विकसित करने हेतु महर्षि पतंजलि ने व्याकरण–शास्त्र को प्रमुख अंग के रूप में विवेचित किया है। वास्तव में, व्याकरण के ज्ञान के विना संस्कृत–वाङ्मय को समझना दुष्कर है। एतन्निमित्त यहाँ व्याकरण के प्रमुख व महत्त्वपूर्ण विषयों की जानकारी छात्रों को उपलब्ध कराने के उद्देश से लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर पाठ्यक्रम का प्रारूप प्रस्तुत है–

Unit	Prescribed Course	Number of Lectures
I	संज्ञा प्रकरण	05
II	सन्धि प्रकरण(लघु सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार): स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि, विसर्ग सन्धि	10
III	शब्द रूपः राम, लता, फल, नदी, वारि, साधु, वधू, मधु, गौ, मातृ, राजन, युष्मद, अस्मद्, तीनों लिगों में–तत्, किम्, सर्व अदस् धातुरूप(पाँच लाकारों में)–लट्, लोट्, लङ् विधिलिंग लृट् भू, गम्, सेव् हृ, लभ्, रम् शीङ्, श्रु, स्था, दृश्	05
IV	अनुवाद–(।) हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद (।।) संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद	05
V	**Tutorial**	05
	Total	30

Reading List

1. शास्त्री, धरानन्द, लघुसिद्धान्तकौमुदी, मूल एवं हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. शास्त्री, भीमसेन, लघुसिद्धान्तकौमुदी, भैमी व्याख्या, भाग–01, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।
3. लघुसिद्धान्त कौमुदी गोविन्द प्रसाद शर्मा चौरवम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
4. रचनानुवाद कौमुदी कपिलदेव द्विवेदी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

अधिगम उपलब्धिः–संस्कृत व्याकरण के अध्ययन के उपरान्त छात्र छात्राओं को निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त होगी–

1. संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगें।
2. संस्कृत वर्णमाला एवं श्लोकों के शुद्ध उच्चारण का कौशल विकसित होगा।
3. संस्कृत वाक्यों, श्लोकों एवं गद्यों को समझने की सामर्थ्य–शाक्ति विकसित होगी।
4. छात्र/छात्राओं को संस्कृत भाषा में सम्भाषण की कला का ज्ञान प्राप्त होगा।
5. संस्कृत वाक्यों के निर्माण की शुद्ध एवं वैज्ञानिक कला का विकास होगा।

14/6/2023

14/6/23

Bachelor of Arts (Honours) Sanskrit under FYUGP
UNIVRESITY OF BIHAR, PATNA

SEMESTER-II (Pattern – 70+30=100)

MJC- II: संस्कृत काव्य

Theory:5 Credits+Tutorial: 1 credit= 6 credits

उद्देश्य

व्यक्तित्व के विकास के लिए काव्य-साहित्य का सेवन नितांत आवश्यक है। शास्त्रों में वर्णित है–

संसारविषवृक्षस्य द्वे एव मधुरे फले।
काव्यामृत रसास्वादः संगमः सज्जनैः सह।।

छात्र छात्राओं के जीवन में काव्य रूपी अमृत का सेवन उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को परिपक्व व सुदृढ़ बनाने में सहायक है। काव्यों की सूक्तियाँ, रसानुभूति, सौन्दर्यबोध मानव–जीवन को आनन्दि एवं आन्दोलित करने तथा जीवन जीने की कला सिखाने में समर्थ है।साधु–काव्य के सेवन से "सत्यं शिवं एवं सुन्दरम्" का समवेत बोध छात्र/छात्राओं को हो सके–एतदर्थ काव्य का अध्ययन/अध्यापन अपेक्षित है।

MJC-1: संस्कृत काव्य		**Credit 6**
Unit	**Topics to be covered**	**No. of Lecture**
1	भगवद्गीता-अध्याय 12 (भक्तियोग)	10
2	रघुवंशम् (प्रथम – सर्ग)	10
3	पूर्वमेघदूतम्	15
4	किरातार्जुनीयम्(प्रथम सर्ग)	15
	Turorial	10
	Total	60

Reading List:

1. रघुवँशमहाकाव्य (प्रथमसर्ग) टीका-मल्लिनाथ,अनुवाद-धारादात्मिश्रा, मोतीलाल बुक्स पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स अशोक राजपथ पटना|
2. रघुवंशमहाकाव्य, पं शेषराज शर्मा रेग्मी चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी शेषराज शर्मा रेग्मी चौखम्भा सुभारती प्रकाशन वाराणसी|
3. श्रीमद्भगवद्गीता व्याख्याकार–मदनमोहन अगवाल, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान वाराणसी, 1994
4. मेघदूतम, मोतीलाल बुक्स पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स अशोक राजपथ पटना|
5. जनार्दन शास्त्री, भारविकृत किरातार्जनीयम्, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6. जनार्दन शास्त्री, भारविकृत रितार्जनीयम्, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
7. श्रीमद्भगद्गीता–एस० राधाकृष्णन कृत व्याख्या का हिन्दी अनुवाद, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली–, 1969
8. बाबूराम त्रिपाठी(सम्पा.), भर्तृहरि कृत नीतिशतकम् महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा, 1986

अधिगम उपलब्धिः–

- छात्र संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- वह संस्कृत साहित्य पद्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्यबोध कर सकेंगे।
- उनमें काव्य में प्रयुक्त रस, छंद, अलंकारों को समझने की क्षमता विकसित होगी।
- पद्य में निहित सूक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होगा।
- छात्रों के शब्दकोश में वृद्धि होने के साथ–साथ वह संस्कृत श्लोकों के शुद्ध और सस्वर उच्चारण के कौशल में निपुण बनेंगे

14/06/2023

14/6/23

Bachelor of Arts (Honours) Sanskrit under FYUGP
UNIVRESITY OF BIHAR, PATNA

SEMESTER-I (Pattern – 70+30=100)

MJC-1: संस्कृत व्याकरण

Theory:5 Credits+Tutorial: 1 credit= 6 credits

उद्देश्य

"मुखं व्याकरणं स्मृतम्"–संस्कृत भाषा की अवगति(समझदारी) विकसित करने हेतु महर्षि पतंजलि ने व्याकरण–शास्त्र को प्रमुख अंग के रूप में विवेचित किया है। वास्तव में, व्याकरण के ज्ञान के विना संस्कृत–वाङ्मय को समझना दुष्कर है। एतन्निमित्त यहाँ व्याकरण के प्रमुख व महत्त्वपूर्ण विषयों की जानकारी छात्रों को उपलब्ध कराने के उद्देश से लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर पाठ्यक्रम का प्रारूप प्रस्तुत है–

Unit	Prescribed Course	Number of Lectures
1	संज्ञाप्रकरण	10
2	सन्धि प्रकरण(लघु सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार): स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि, विसर्ग सन्धि	13
3	सुबन्त, तिङन्त एवं लकार–परिचय	15
4	अनुवाद	12
5	Turorial	10
	Total	60

Reading List

1. शास्त्री, धरानन्द, लघुसिद्धान्तकौमुदी, मूल एवं हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. शास्त्री, भीमसेन, लघुसिद्धान्तकौमुदी, भैमी व्याख्या, भाग–01, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।
3. लघुसिद्धान्त कौमुदी गोविन्द प्रसाद शर्मा चौरवम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
4. रचनानुवाद कौमुदी कपिलदेव द्विवेदी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

अधिगम उपलब्धिः–संस्कृत व्याकरण के अध्ययन के उपरान्त छात्र छात्राओं को निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त होगी–

1. संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगें।
2. संस्कृत वर्णमाला एवं श्लोकों के शुद्ध उच्चारण का कौशल विकसित होगा।
3. संस्कृत वाक्यों, श्लोकों एवं गद्यों को समझने की सामर्थ्य–शाक्ति विकसित होगी।
4. छात्र/छात्राओं को संस्कृत भाषा में सम्भाषण की कला का ज्ञान प्राप्त होगा।
5. संस्कृत वाक्यों के निर्माण की शुद्ध एवं वैज्ञानिक कला का विकास होगा।

14/06/2023

14/6/23